Total Pages : 7

2641-R

Second Year Arts (Regular) Examination, 2018

SANSKRIT

Paper–I

(नाटक, छन्द एवं अलंकार)

Time allowed : Three Hours
Maximum Marks : 100

खण्ड-अ [Marks : 20

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पचास शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-ब [Marks : 50

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए।

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-स [Marks : 30

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिये :

इकाई-I

(अ) अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के मंगलाचरण में किस देवता की स्तुति की गई है?

(ब) शकुन्तला किसकी पुत्री थी?

इकाई-II

(स) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक का नाम क्या है?

(द) शकुन्तला को खोजता हुआ राजा किस नदी के तट पर पहुँचता है?

इकाई-III

(य) राजा को अंगूठी की पुनः प्राप्ति कैसे हुई?

(र) इन्द्र के सारथी का नाम क्या है?

इकाई-IV

(ल) उपजाति छन्द में किन दो छंदों का योग होता है?

(व) इन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण लिखिये।

इकाई-V

(श) अनुप्रास अलंकार का लक्षण लिखिये।

(ष) स्पष्ट और सुन्दर समता होने पर कौनसा अलंकार होता है?

खण्ड-ब

इकाई-I

2. अधोलिखित पद्य की संस्कृत में सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः।

एष राजेव दुष्यन्तः सारङ्गेणातिरंहसा।।

अथवा

शमप्रधानेषु तपोधनेषु

गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः।

स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्ता-

स्तदन्यतेजोऽभिभवाद्वमन्ति।।

इकाई-II

3. निम्नलिखित पद्य की संस्कृत में सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

अर्थोहि कन्या परकीय एव

तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः।

जातो ममायं विशदः प्रकामं

प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।

अथवा

विचिन्तयन्ती यमन्यमानसा

तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।

स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्

कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।।

इकाई-III

4. निम्नलिखित पद्य की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

सिध्यन्ति कर्मसु महत्स्वीप यन्नियोज्या:

संभावनागुणमवेहि तमीश्वराणाम्।

किं वाऽभविष्दिरुणस्तमसां विभेत्ता

तं चेत् सहस्रकिरणों धुरि नाकरिष्यत्।।

अथवा

भवन्ति नम्रास्तरव: फलोद्गमै-

र्नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घना:।

अनुद्धता: सत्पुरुषा: समृद्धिभि:

स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।।

इकाई-IV

5. निम्नलिखित छंदों में से किन्हीं दो के मात्रा तथा गण परिगणना सहित लक्षण और उदाहरण दीजिये :

(क) वसन्ततिलका

(ख) मालिनी

(ग) वंशस्थ

(घ) शिखरिणी

इकाई-V

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो अलंकारों के लक्षण व उदाहरण लिखिये :

(क) समासोक्ति

(ख) यमक

(ग) दीपक

(घ) उत्प्रेक्षा

खण्ड-स

7. दुष्यन्त का चरित्र-चित्रण कीजिये।

अथवा

नाट्यशास्त्रीय नियम के आधार पर "अभिज्ञानशाकुन्तलम्" की समीक्षा कीजिये।

8. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रकृति-चित्रण का वर्णन कीजिये।

अथवा

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पंचम अंक के आधार पर तत्कालीन सामाजिक स्थिति का चित्रण कीजिये।